NBT
नवभारत टाइम्स
में विज्ञापन देने के लिए 18001205474 पर कॉल करें। नवभारत टाइम्स का अंक प्राप्त करने के लिए 18001200004 पर कॉल करें या subscribe.timesofindia.c
विक्रम संवत 2081
वर्ष 79, संख्या 8 › पेज 14 › मूल
ली । शुक्रवार, 10 जनवरी 2025

जितनी मुश्किलें, उतनी ताकत... यही होता है फौजी का स्ट्रॉन्ग पॉइंट

Poonam.Pandey@timesofindia.com

नई दिल्ली: इंडियन आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने NBT संवाद में स्टूडेंट्स से बात करते हुए कहा कि आज के युवा बहुत तेजी से भाग रहे हैं। उनके पास वक्त नहीं है कि थोड़ा सा ठहरें, जिंदगी के बारे में सोच-विचार करें, इंट्रोस्पेक्शन करें और फिर कदम आगे बढ़ाएं। जनरल द्विवेदी ने कहा कि मैंने भोपाल में छोटी सी एक शॉप खरीदी है, जिसका नाम रखूंगा आहिस्ता जिंदगी और उसमें सिर्फ कॉफी होगी। मैं बैठूंगा और ढेर सारी किताबें होंगी। मैं सबको ये बोलूंगा कि जिंदगी की रेस में भागो नहीं। अगर आप भागते रहे तो जब जिंदगी के अंत में रुककर देखेंगे फिर सोचेंगे कि मैंने पाया क्या? मेरी जिंदगी में अचीवमेंट क्या है, मैं खुश कब रहा? इसलिए बहुत जरूरी है ठहराव। आराम से जिंदगी के बारे में सोचो फिर आगे बढ़ो।

आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी पत्नी सुनीता द्विवेदी के साथ एनबीटी रीडर्स और स्टूडेंट्स से मिले

केमिस्ट्री लगती है मुश्किल

आर्मी चीफ ने बताया कि मेरे पिताजी माइनिंग ऑफिसर थे। वे हमेशा डायमंड, कोल, मिनरल्स माइंस, जंगलों के बारे में बताते थे तो भूगोल मेरी पसंद का विषय बन गया। मेरे दोनों बड़े भाई किताबों की लाइब्रेरी मेंटेन करते थे। इतिहास के बारे में पुस्तकें निकाल कर देते थे और माताजी भी कहानियां सुनाती थी, इसलिए इतिहास पसंद आने लगा। पहले मुझे मैथ्स मुश्किल लगती थी, फिर मेरे बड़े भाई ने थोड़ा वैदिक मैथ्स के बारे में बताया। तब लगा कि मैथ्स तो सरल विषय है। लेकिन केमिस्ट्री, मुझे अभी भी बहुत मुश्किल

निकले। अपनी स्कूल फीस वह ट्यूशन पढ़ा के देते थे। लेकिन, उनके संघर्ष को देखकर मुझे ये लगा कि मुझे ज़िन्दगी में कुछ ऐसा करना चाहिए, जिसमें सब गर्व महसूस करें।

NBT संवाद

...जब सीनियर्स को कुछ बोल दिया

पंजाब के स्टूडेंट गुर्जंत सिंह के सवाल के जवाब में आर्मी चीफ ने NDA ट्रेनिंग के वक्त का एक किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि हॉकी का मैच चल रहा था। जो जूनियर मोस्ट कोर्स होता है, उसका काम होता है चियर करना, तो हम तो जोश में आ गए और जोश में ही सीनियर बैच को भी बोल दिया, कम ऑन यू ऑल्सो चियरअप। सभी ने ऐसे घूर के देखा....। मैच तो हमारी चार्ली स्क्वॉड्रन जीत गई, लेकिन मुझे अच्छे से याद है कि वो

1.3 करोड़ का परिवार

एमएम पब्लिक स्कूल की स्टूडेंट अर्पिता के सवाल के जवाब में आर्मी चीफ ने कहा कि आज की तारीख में मेरा परिवार 1.3 करोड़ का है। 12 लाख तो मेरे जवान हैं, फिर उनके परिवारजन हैं 24 लाख। रजिस्टर्ड एक्स सर्विसमैन 25 लाख है, उनके डिपेंडेंट 28 लाख है, सात लाख विडोज रजिस्टर्ड हैं। इसी तरह 36 लाख लोग जो उनके साथ रहते हैं, पर डिपेंडेंट नहीं हैं। ये सब मिलाकर मेरा परिवार है। अपने इस परिवार को मैं अकेले नहीं मिलता हूं। मेरी पत्नी भी मेरे साथ मिलती हैं। मेरी पत्नी भी सारे डिफिकल्ट एरिया मे चाहे पैंगोंग लेक हो, किबितू हो या लोंगेवाला सब जगह होकर आई हैं। मेरी दो बच्चियां हैं। हम कोशिश करते हैं कि हर रोज कुछ मिनट के लिए ही सही विडियो कॉल पर बात हो जाए।

सभी स्कूल के बच्चों के लिए फौज में मौके

दिल्ली के स्टूडेंट रोनित के सवाल पर आर्मी चीफ ने बताया कि ऐसा नही है कि सिर्फ सैनिक स्कूल के बच्चे ही फौज मे ज्यादा जाते है। ये सौभाग्य है कि आज दो चीफ (आर्मी चीफ और नेवी चीफ) एक ही क्लास के एक ही सेक्शन के और एक ही शहर के रहने वाले है। लेकिन ये बहुत ही कम होता है। अभी सिर्फ 10 पर्सेंट ऑफिसर्स सैनिक स्कूल, मिलिट्री स्कूल या राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज से आते है। बाकी सब अलग-अलग स्कूलों से ही आते है। सबसे ज्यादा जरूरी है क्या आप खुद को बचपन से फौज मे जॉइन